

उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव एवम चुनौतियां

डॉ आभा सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

एजुकेशन डिपार्टमेंट

जे० एस० हिन्दू पी० जी० कॉलेज अमरोहा

इंटरनेट एक प्रौद्योगिकी विकास है जो न केवल समाज के ज्ञान को बनाए रखता है, बल्कि उसमें उच्च शिक्षा के पारंपरिक मॉडलों को रूपांतरित और पुनर्गठन करने की क्षमता है। विशेष रूप से पाठ्यक्रम सामग्री और संबद्ध संसाधनों के वितरण और आदान-प्रदान के लिए ई-शिक्षण पहल प्रदान करने के लिए इंटरनेट के उपयोग से व्यावसायिक बाजार और उच्च शिक्षा संस्थानों, दोनों में अपेक्षाएं पैदा हो गई हैं। वास्तव में, ई-शिक्षण ने विश्वविद्यालयों को नए भावी विद्यार्थियों का लाभ उठाने तथा अपने को वैश्विक शैक्षिक प्रदाताओं के रूप में स्थापित करने में मदद की है।

शिक्षा प्रणाली की अमूर्त - प्रभाविता उसके प्रदर्शन की गुणवत्ता के स्तर पर निर्भर करती है। कक्षा शिक्षण और दूरस्थ शिक्षा जैसी पारंपरिक शिक्षण विधियों की अपनी सीमाएं हैं। कुशल और अनुभवी मानव शक्ति सहित वित्त, मूल संरचना और अन्य संसाधनों की सीमाओं के कारण शिक्षा के मानकों को सुरक्षित रखना मुश्किल हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रदान किया गया शिक्षण (आईटी) कुछ हद तक एक सुविधाजनक स्थान और उपयुक्त समय पर आवश्यक जानकारी प्रदान करके उच्च गुणवत्ता का शिक्षण सुनिश्चित करता है। यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि ई-शिक्षा जानकारी की गुणवत्ता और प्रभावी प्रस्तुति पर जोर देती है। यह पत्र उच्च शिक्षा की संरचना और परिदाय, छात्रों और व्याख्याताओं के लिए निहितार्थ तथा समाज पर वैश्विक प्रभाव सहित उच्च शिक्षा में ई-शिक्षा के कार्यान्वयन से जुड़े मुद्दों की जांच करता है।

परिचय

ई-लर्निंग अथवा ऑनलाइन शिक्षा

ई-शिक्षा से तात्पर्य अपने स्थान पर ही इंटरनेट व अन्य संचार उपकरणों की सहायता से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है। ई-शिक्षा के विभिन्न रूप हैं, जिसमें वेब आधारित लर्निंग, मोबाइल आधारित लर्निंग या कंप्यूटर आधारित लर्निंग और वर्चुअल क्लासरूम इत्यादि शामिल हैं।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली (ई-लर्निंग) को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है। ई-शिक्षा के समानार्थक शब्दों के रूप में सीबीटी (CBT) (कंप्यूटर आधारित प्रशिक्षण), आईबीटी (IBT) (इंटरनेट - आधारित प्रशिक्षण) या डब्ल्यूबीटी (WBT) (वेब आधारित प्रशिक्षण) जैसे संक्षिप्त शब्द-रूपों का इस्तेमाल किया जाता रहा है।

ऑनलाइन शिक्षा मात्र तकनीक नहीं सामाजीकरण की नई प्रक्रिया है जिसके जरिये सरकार और नीति निर्धारकों की नीति व नीयत को समझा जा सकता है और उसे उसी रूप में देखने की भी जरूरत है। कोरोना संकट में शारीरिक दूरी बनाए रखकर शिक्षा के लिए तकनीकी का प्रयोग एक बात है। वैसे भी तकनीकी के विकास के साथ ही शिक्षा में भी उसका उपयोग होता रहा है। यह होना जरूरी भी है। ब्लैकबोर्ड से लेकर स्मार्टबोर्ड तक बदलती तकनीकी का उपयोग क्लासरूम टीचिंग को मजबूत और रुचि कर बनाने के लिए किया

जाता था है। लाइब्रेरी का डिजिटल होना उसी प्रक्रिया का एक रूप है। प्रोफेसर्स के व्याख्यान को रिकॉर्ड करना और उन्हें ऑनलाइन उपलब्ध कराना भी तकनीकी का उपयोग करना ही है। इन तकनीकों का उपयोग कर सामाजिकरण की प्रक्रिया को शिक्षा के द्वारा बढ़ाया जाता रहा था।

भारत का उच्च शिक्षा का सेक्टर, ऑनलाइन शिक्षा के पाठ्यक्रम को अपनाने में बहुत सुस्त रहा है। इसीलिए अचानक से ऑनलाइन पढ़ाई की ज़रूरत सामने खड़ी हुई, तो ये सेक्टर पूरी तरह से इसके लिए तैयार नहीं दिख रहा है। 30 जनवरी 2020 तक देश के केवल सात उच्च शिक्षण संस्थान ऐसे थे जिन्होंने यूजीसी (UGC) की 2018 गाइडलाइन्स के अनुसार ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध कराने की इजाजत ली हुई थी। कोविड - 19 की महामारी फैलने से पहले देश के लगभग 40 हजार उच्च शिक्षा संस्थानों में से अधिकतर के पास ऑनलाइन पाठ्यक्रम शुरू करने की अनुमति नहीं थी। इसीलिए, जब केंद्र और राज्य सरकारों ने इन संस्थानों को ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से अपने छात्रों को पढ़ाई कराने का आमंत्रण दिया, तो ये संस्थान इसके लिए तैयार नहीं थे। ये तो मई महीने के मध्य में जाकर वित्त मंत्री ने एलान किया था कि देश की नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (NIRF) के तहत टॉप के 100 शिक्षण संस्थानों को स्वतंत्र ही ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम करने की इजाजत मिल गयी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत अभियान के ब्योरे देते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 17 मई को पहले से मौजूद दीक्षा (डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर या नॉलेज शेयरिंग) पहल के साथ ऑनलाइन शिक्षा का एक मल्टी-मोड डिजिटल प्लेटफॉर्म 'पीएमईविद्या' लॉन्च करने का एलान किया। इसमें हरेक कक्षा के लिए टीवी पर एक चैनल तय होगा। पीएमईविद्या में सामुदायिक रेडियो और पॉडकास्ट का भी व्यापक इस्तेमाल किया जाएगा। यह बच्चों और परिवारों को भावनात्मक और मानसिक सहायता देने के कार्यक्रम 'शमनोदर्पण' के अलावा होगा। सरकार शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों को 30 मई से ऑनलाइन कोर्स शुरू करने की इजाजत देगी।

भारत में ई-शिक्षा की स्थिति ई-शिक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा शैक्षणिक उपकरणों और संचार माध्यमों का उपयोग करते हुए शिक्षा प्रदान करने के लिये पहचाने जाने वाले प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। वस्तुतः अभी भारत में ई-शिक्षा अपने शैशवावस्था में है या वो कौनकौन सी चुनौतियां हैं जिससे शिक्षक और विद्यार्थी दोनों प्रभावित हैं? क्या स्कूली शिक्षा से जुड़े करीब 25 करोड़ और उच्च शिक्षा से जुड़े करीब आठ करोड़ विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा से जुड़े पा रहे हैं? हालांकि देश के शिक्षा जगत ने समस्या को अवसर में बदलने के लिए भरसक प्रयास किए हैं परंतु वो नाकाफी से नज़र आ रहे हैं। भारत में ऑनलाइन शिक्षा के समाने बहुत सारी चुनौतियां मूहबाये खड़ी हैं। ऑनलाइन शिक्षा के लिए गुणवत्ता तंत्र और गुणवत्ता बेंचमार्क स्थापित करना भी महत्वपूर्ण है। कई ई-लर्निंग मंच एक ही विषय पर कई पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। इसलिए, विभिन्न ई-लर्निंग प्लेटफार्मों में पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता भिन्न हो सकती है। तकनीक का असमय फेल होना जैसे इंटरनेट की स्पीड, कनेक्टिविटी की समस्या, लॉक डाउन के समय में कोई साथ उपस्थित होकर सिखाने एवं बताने वाला नहीं होने से भी ऑनलाइन ट्यूटोरियल की सहायता से ही सीखने की मजबूरी, घर में जो साधन उन्हीं की सहायता से लेक्चर तैयार करना उसे रिकॉर्ड करना, नोट्स बनाना उनकी डिजिटल कॉपी तैयार करना, स्टडी मटेरियल खोजना एवं पाठ्यक्रम के अनुरूप उसे विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करना, छात्र-छात्राओं से संवाद करना आदि अनेकों नई प्रकार की चुनौतियां शिक्षा समुदाय के समक्ष हैं प्रौद्योगिकी का डेमोक्रेटाइजेशन अब एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, जिसमें इंटरनेट कनेक्टिविटी, टेलीकॉम इंफ्रास्ट्रक्चर, ऑनलाइन सिस्टम की क्षमता, लैपटॉप / डेस्कटॉप की उपलब्धता, सॉफ्टवेयर, शैक्षिक उपकरण, ऑनलाइन मूल्यांकन उपकरण आदि शामिल हैं। देश में हर शैक्षणिक बोर्ड, कॉलेज, विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम अलग अलग हैं। जिसका अपना एक अलग अर्थशास्त्र है।

पाठ्यक्रम की असमानता एक बहुत बड़ी चुनौती है, जो ऑनलाइन शिक्षा के समुचित क्रियान्वयन में आड़े आ सकती है। 'पाठ्यक्रम की असमानता' इंटरनेट स्पीड और तकनीकी का अभाव तुरंत प्रतिक्रिया का आभाव 'तकनीकी समझ का अभाव' 'मानसिक और शारीरिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव' 'प्राकृतिक भाषा

प्रसंस्करण जैसी तकनीकें परिपक्व नहीं हुई हैं , अधिकांशतः सभी स्कूल , कॉलेज और विश्वविद्यालय जो ऑनलाइन शिक्षण चला रहे हैं, वह टाइम टेबल के उसी स्वरूप को अपना रहे हैं जो वह कक्षाओं में चला रहे थे। ऐसे में समस्या यह खड़ी होती है कि क्या विद्यार्थी और शिक्षक कुर्सी से चिपके हुए सुबह नौ बजे से शाम पांच बजे तक कक्षाएँ चला सकते हैं? इसके कई दुष्प्रभाव भी हैं । सामान्यतरु यह संभव नहीं है। फिर भी शिक्षकों और विद्यार्थियों पर यह थोपा जाना एक बड़ी समस्या है। ऑनलाइन शिक्षण को सामान्यतरु रेगुलर कक्षाओं की तरह नहीं चलाया जा सकता। तकनीकी की लत और दुष्प्रभाव अभी वर्तमान में ऑनलाइन कक्षाएँ सामान्यतः चार से पांच घंटे तक चलाई जा रही हैं। उसके बाद शिक्षार्थी को गृहकार्य के नाम पर एसाइनमेंट और प्रोजेक्ट दिए जा रहे हैं। जिसका औसत यदि देखा जाये तो एक विद्यार्थी और शिक्षक दोनों लगभग आठ से नौ घंटे ऑनलाइन व्यतीत कर रहे हैं। जोकि उ नकी मानसिक और शारीरिक स्थिति के लिए घातक है। छोटे बच्चों के लिए और भी अधिक नुकसानदेह है। कई अभिभावकों ने फेसबुक पोस्ट के माध्यम से बताया कि उनके बच्चों की आंखों में समस्याएँ पैदा रही है । इसके अलावा तकनीकी का बहुतायत उपयोग अवसाद, दुश्चिंता, अकेलापन आदि की समस्याएँ भी पैदा करता है । बहरहाल सवाल अब भी वहीं खड़ा है कि क्या ऑनलाइन शिक्षा एक प्रभावी शिक्षा प्रणाली हो सकती है, जो गुरुकृशिष्य की आमने सामने पढ़ाई का विकल्प बने? अभी तक तो ऐसा नहीं दिखता। सरकार और शिक्षा जगत के लोग इसको बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत हैं लेकिन भारत जैसे बड़े देश में ऑनलाइन शिक्षा में आने वाली बाधाओं से पार पाना अभी दूर की कौड़ी नज़र आ रहा है। परीक्षाओं और तकनीकी विषयों की प्रयोगात्मक परीक्षाएँ आदि को ऑनलाइन कराने का सवाल अभी भी जस का तस खड़ा है। हाल ही में जारी यूजीसी की गाइड लाइन ने भी पेनकॉपी वाले एग्जाम की ही वकालत की है। ऑनलाइन शिक्षा के बढ़ाव की भारत में प्रबल संभावनाएँ हैं , लेकिन चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। जब तक चुनौतियों का बेहतर आंकलन नहीं किया जायेगा तब तक अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सकते। इन समस्याओं से बचने के लिए प्रभावी चिंतन की आवश्यकता है, जिससे इनसे देश के भविष्य को बचाया जाए।

COVID-19 महामारी से पूर्व भारतीय के अधिकांश शिक्षण संस्थानों को ऑनलाइन शिक्षा का कोई विशेष अनुभव नहीं रहा है , ऐसे में शिक्षण संस्थानों के लिये अपनी व्यवस्था को ऑनलाइन शिक्षा के अनुरूप ढालना और छात्रों को अधिक-से-अधिक शिक्षण सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती होगी ।

वर्तमान समय में भी भारत में डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर की बहुत कमी है , देश में अब भी उन छात्रों की संख्या काफी सीमित है, जिनके पास लैपटॉप या टैबलेट कंप्यूटर जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं । अतः ऐसे छात्रों के लिये ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ना एक बड़ी समस्या है।

शिक्षकों के लिये भी तकनीक एक बड़ी समस्या है , देश के अधिकांश शिक्षक तकनीकी रूप से इतने प्रशिक्षित नहीं है कि औसतन 30 बच्चों की एक ऑनलाइन कक्षा आयोजित कर सकें और उन्हें ऑनलाइन ही अध्ययन सामग्री उपलब्ध करा सकें ।

इंटरनेट पर कई विशेष पाठ्यक्रमों या क्षेत्रीय भाषाओं से जुड़ी अध्ययन सामग्री की कमी होने से छात्रों को समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है ।

कई विषयों में छात्रों को व्यावहारिक शिक्षा (Practical Learning) की आवश्यकता होती है, अतः दूरस्थ माध्यम से ऐसे विषयों को सिखाना काफी मुश्किल होता है ।

आगे की राह शिक्षण क्षेत्र पर COVID-19 और लॉकडाउन के प्रभाव ने शिक्षण संस्थाओं को शिक्षण माध्यमों के नए विकल्पों पर विचार करने हेतु विवश कर दिया है।

भारत में ई-शिक्षा अपनी शैशवावस्था में है, आवश्यक है कि इसकी राह में मौजूद विभिन्न चुनौतियों को संबोधित कर ई-शिक्षा के रूप में एक नए शिक्षण विकल्प को बढ़ावा दिया जाए ।

टेलीविज़न और रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से देश के दूरस्थ भागों में स्थित ग्रामीण क्षेत्रों में भी लॉकडाउन के दौरान शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित की जा सकती है।

REFERENCES

Websites:

- [1]. <https://en.wikipedia.org/wiki>
- [2]. <http://mhrd.gov.in/university-and-higher-education>
- [3]. Magazine and News paper-
- [4]. Danik jagaran
- [5]. Times of india

Journals / Articles :

- [6]. Jaiswal, V. (2013). Current Status of E-Learning in Indian Higher Education: A Case Study of U.P.
- [7]. Nelasco, S., Nilasco, A. & Paul, A. (2007, November). ELearning for Higher Studies Of India, Fourth International Conference on eLearning for Knowledge-Based Society, technology in collaborative learning networks: Applications and research issues. *International Journal of Knowledge and Learning*, 4(1), 36-57.
- [8]. Cheung, C. M., Chiu, P.-Y., & Lee, M. K. (2011). Online social networks: Why do students use facebook? *Computers in Human Behavior*, 27(4), 1337-1343.
- [9]. Dholakia, U. M., Bagozzi, R. P., & Pearo, L. K. (2004). A social influence model of consumer participation in network-and small-group-based virtual communities. *International Journal of Research in Marketing*, 21(3), 241-263.
- [10]. Elena Lidia Alexa, M. A. a. C. M. S. (2012). The Use of online marketing and social media in higher education institutions in Romania. *Journal of Marketing Research & Case Studies*, 2012.
- [11]. Ellison, N. B. (2007). Social network sites: Definition, history, and scholarship. *Journal of Computer Mediated Communication*, 13(1), 210-230.